वास्तव में यह सब चित्र हैं अंधों के आगे आइना। यह रावण राज्य है वा राम–राज्य है यह भी समझ मनुष्यों को नहीं है। मनुष्य को शूद्र मनुष्य भी कहते हैं। मनुष्य को ब्राह्मण मनुष्य भी कहते हैं। मनुष्य को देवता मनुष्य भी कहते हैं। विराट रूप पर भी समझाना चाहिए देखो हम हैं ब्राह्मण चोटी। फिर बनते हैं देवताएँ। ब्राह्मणों को देवता कौन बनाये। देवताएँ होते भी हैं सतयुग में। नर्क में तो दुख अपार है। तुम समझाने वाले हो संगमयुगी। संगमयुगी ही पास्ट और फ्युचर का राज़ समझा सकते हैं। पुरानी दुनिया और नई दुनिया का है संगम। तुम हो ब्राह्मण। पास्ट और फ्युचर को तुम समझा सकते हो। तुम्हारे लिए कलियुग अभी पास्ट हो गया है। तुम बच्चे समझा सकते हो हम हैं पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण। हमको पास्ट कलियुग फ्युचर सतयुग का ज्ञान है। ब्राह्मणों के बाद हम देवता बनने वाले हैं। ब्राह्मणों को देवता कौन बनावेंगे? देवताओं की है नई सृष्टि स्वर्ग। सिर्फ परमात्मा ही स्थापन करते हैं। स्थापना कराते हैं ब्रह्मा द्वारा। प्रजापिता ब्रह्मा का बाप भी चाहिए ना। यह है ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर। तो इनका बाप कौन? शिव तो है निराकार उनका बाप हो नहीं सकता। प्रजापिता ब्रह्मा का बाप हुआ वह निराकार शिव। वह तीनों को रचते हैं। कोई तुमसे पूछे ब्रह्मा कहाँ से आया। उनका तो बाप शिव ही है। आत्मा तो उनमें है। आत्माओं का बाप शिव हुआ। शिवबाबा बैठ ब्राह्मणों को देवता बनाते हैं राजयोग से। तुमको पास्ट और फ्युचर का पता है। पास्ट में अपार दुख है जानते हो अपार दुख है। फ्युचर में अपार सुख है। संगमयुग पर हो ना। पास्ट जो हमारी लाइफ थी वह बहुत ही दुखी थी। हम अभी फ्युचर को जानते हैं बहुत ही सुखी लाइफ में जाते हैं। समझाना पड़े हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। संगमयुगी पास्ट और फ्युचर को समझ सकते हैं। पास्ट है दुखधाम की दुनिया। फ्युचर है सुखधाम की दुनिया। बाप बीच में आकर समझाते हैं। तुम कह सकते हो संगमयुग के बाद फिर सतयुग ही आवेगा। पिछाड़ी में है दुख का युग। समझाने की युक्तियाँ बहुत चाहिए; परन्तु मुश्किल कोई समझते हैं। तुम यही बताओ हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। शूद्र के पीछे ब्राह्मण फिर देवता। हम प्रजापिता ब्रह्मा के सन्तान हैं। फिर देवता बनते हैं। आगे शूद्र थे। फिर जैसे बाबा ..... देवता बनेंगे हम भी बनेंगे। मनुष्य हैं पापात्माएँ, देवताएँ हैं पुण्यात्माएँ। अभी पापात्मा से पूण्यात्मा कैसे बनेंगे? बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम पतित से पावन बन जावेंगे। यह ड्रामा चलता रहता है। ऐसे2 विचार सागर मंथन कर समझाने की कोशिश करनी चाहिए। जो टाइम मिले एकान्त में बैठ विचार करो किसको कैसे समझावें। विराटरूप तो बहुत अच्छी समझाने की चीज़ है। हम ब्राह्मण फिर देवता बनने वाले हैं। बाप समझाते हैं तो नोट करनी चाहिए; क्योंकि पत्थर बुद्धि है ना। तुम पत्थर बुद्धि और पारस बुद्धि संगम पर हो। दोनों को जानते हो। बाप कहते हैं मेरा नाम ही पतित पावन है। मैं युगे2 आ नहीं सकता हूँ। बाप संगम पर ही आते हैं। कलियुग में पतित, सतयुग में पावन। हम ब्राह्मण हैं मुखवंशावली वह हं कुख वंशावली। तुम बाप के बच्चे हो ना। विराट रूप का चित्र कम नहीं है। बहुत सहज समझा सकते हैं। तुम बता सकते हो हम ब्राह्मण से देवता बनने वाले हैं। बनाने वाला चाहिए ना। ब्रह्मा का बाप शिव। वह ब्रह्मा द्वारा हमको समझाते हैं। वह ब्रह्मा में बैठ ब्राह्मणों को समझाते हैं। तो ब्रह्मा भी सुनते हैं। संगमयुग पर प्रजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। तब ब्राह्मण हो। इस समय ही नाम निकलता है ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। ऐसे2 प्वाइंट निकाल विचार सागर मंथन कर समझाना है। कल्प पहले जो सुना है वही सुनेंगे। प्रजा बहुत बनती जाती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। प्रजा भी चाहिए। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी घराणे के सभी यहाँ बनने हैं जो फिर नम्बरवार आकर पद पावेंगे। कल्प2 ऐसी प्रद0वाम्यु0 खोले होंगे। फिर कल्प बाद ऐसे ही सर्विस करेंगे। ऐसे ही सैंपलिंग निकलेंगे। सारा पुरुषार्थ ब्राह्मणों का है। जैसा2 पुरुषार्थ वैसा2 पद। ब्राह्मणों की फिर लड़ाई है 5 विकारों से। 5 विकारों पर जीत पानी होती है। अच्छे2 बच्चे को झट हराये लेते हैं। माया आधा कल्प राज्य करती है। तुम समझते हो विकारियों को निर्विकारी बनना है। इसलिए कहा जाता है तुम युद्ध के मैदान में हो। अभी तुम कौरव से पाण्डव बने हो। पाण्डव कहो वा ब्राह्मण कहो बात एक ही है। इस समय है पंचायती राज्य। वास्तव में राज्य राजा–रानी में होता है। पंचायती राज्य इस समय

आकर होता है ड्रामा प्लैन अनुसार। बाप ने आकर राजा–रानी का राज्य स्थापन किया। पीछे पंचायती राज्य ..... तो राजाओं को भी उड़ा देते हैं। एग्रीमेन्ट भी खड़े नहीं होते। उन्हों का भी केस आदि चलेगा। वह भी ..... करते होंगे; क्योंकि एग्रीमेन्ट तोड़ देते हैं। इसको कहा जाता है ठगी। तो यह सभी बातें बाप समझाते हैं। .... राजधानी स्थापन करता हूँ। यह है राइटियस और अनराइटियस का संगमयुग। भक्तिमार्ग में भी वह पानी ... संगम बताया है। सागर और नदी का संगम। नदियाँ तो बहुत है। ब्रह्मपुत्री है बड़ी नदी। बाप भी इसमें ..... आत्माओं और परमात्मा का मेल भी इस बड़ी नदी में होता है। बहुत मीठी2 बातें समझने की हैं; परन्तु जब रोज़ आकर समझे। तो सुनते रहेंगे। आवेंगे ही थोड़े रोज़ तो क्या समझेंगे। बाप का परिचय देना है। बाप ..... याद करते हैं ना। शिवबाबा माना बाबा। है भी बेहद का बाप। उनसे स्वर्ग की रचना होती है। स्व(र्ग) .... बादशाही थी। कल की बात है। लाखों वर्ष की बात तुम नहीं कहते हो। कल की बात है। हमने राज्य ..... फिर माया ने छीन लिया। हार–जीत का खेल तुम समझा सकते हो। अभी भगवान जीत पहना रहे हैं। कहते हैं .... याद करो। और वह है शान्तिधाम। मूल बात है दैवीगुण धारण करने की। देवताओं जैसा सर्वगुण सम्पन्न बनना .... मलेच्छ का खान–पान, संग भी न रहना चाहिए। तुम बच्चों को यहाँ है ब्राह्मणों का संग। वहाँ शूद्रों के सं... जाने से कुछ असर पड़ जाता है। ब्राह्मणों के संग में तुम यहाँ सेफ्टी से रहते हो। घर में फिर शूद्रों का ..... को रंग लगता है। वह बुद्धि को चलायमान कर देता है। संग में कोई ने कहा सिगरेट क्यों नहीं पीते ..... में पीया। फिर यह आदत पर जाती। संग बड़ा नुकसान कर देता है। बड़ा घाटा डालते हैं, बिल्कुल दिवाला भी निकाल देते हैं। काला मुँह किया तो दिवाला निकला। अभी कृष्ण, राम को काला बनाते हैं। काले तो विकारी ..... फिर विकारी की पूजा करनी चाहिए ना। निषेध है ना। वह भी काले तुम भी काले फिर काले काले की पूजा करेंगे। समझ की बात है ना। श्रीनाथ द्वारे में काला चित्र है। वह भी काम चिक्षा पर चढ़ा हुआ तुम भी काम चिक्षा पर चढ़ हुए। अभी कलकत्ता में काली है। वह है सबसे काली। काली को क्यों पूजना चाहिए। अकल है नहीं। कृष्ण जो गोरा पवित्र है उनकी पूजा करो। अपवित्र की क्यों करते हो। तो यह सभी है अज्ञान। कलकत्ते में जाकर समझाओ। यह काम चिक्षा पर चढ़ काली बन गई है। माता तो गोरी होनी चाहिए ना। बाप के बने और सेकण्ड में जीवनमुक्ति। समझते हैं स्वर्ग की बादशाही मिलनी है फिर अगर विकार में गया तो स्वर्ग की बादशाही कैसे मिलेगा। देवताएँ कब काला मुँह नहीं करते। देवताओं में 5 विकार होनी ही नहीं चाहिए। 5 विकारों को ..... देनी चाहिए। इसको छोड़ने में ही कितनी मेहनत लगती है बच्चों को। अपार दुख है। भारत में अपार सुख थे। अभी फिर पुरुषार्थ कर अपार सुख ले रहे हैं। अभी संगमयुग का यह एपिसोड है। गीता में कृष्ण भगवानुवाच है नहीं। कहा जाता है शिव भगवानुवाच। वही ज्ञान का सागर है। बाप ज्ञान का उचार करते हैं। भक्ति का ..... प्वाइंट्स तो बहुत ही समझाई जाती है। फिर भी श्रीमत पर कोई2 चलते हैं। आसुरी चलन चल पड़ते हैं। ..... पीना, शराब पीना, विकार में जाना। बाप को याद न करना। बहुत घाटा डाल देते हैं। कल्प2 डालते हैं। ..... राजाई स्थापन होता है। कम नहीं। और धर्मों की पहले राजाई नहीं होती है। जब बहुत वृद्धि हो तब लश्कर इकट्ठा हो तब लड़ाई शुरू होती है। आधा कल्प तो लड़ाई होती नहीं। बाप बताते हैं मैं आकर स्वर्ग की स्थापना करता हूँ। वहाँ नई दुनिया में लड़ाई होती ही नहीं। बहुत बाद में लड़ाई शुरू होती है। वह हिसाब बता सकते हैं। बाप का बच्चा तो सपूत बनना चाहिए ना। वही ऊँच पद पा सकते हैं। सपूत की भी दर्जे .... हैं। सपूत उनको कहते हैं बाप भगवान के श्रीमत पर चले। भगवान के मत पर न चलेंगे तो भगवान भी ..... करेंगे। बाप कहते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार यह राजधानी बननी है। पुरुषार्थ सभी को करना है। सूर्यवंशी बनना है .... बाप को फालो करो। दोनों की मत पर चलो। तुम व्यापारी हो। व्यापार करो घाटा न डालो। अपना पूरा सौदा कर लो। जैसे कहते हो बाबा हम आपसे तो पूरा विश्व की बादशाही लेंगे। तो ऐसे बनो ना। घाटा न .....। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते। –: शिवबाबा और वरसा याद है? :–